International Journal of Business Economics and Management Research
Vol. 16, Issue 9,September 2025 Impact Factor: 8.857 ISSN: (2229-4848)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

भारत– अफगानिस्तान संबंधः सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ

डॉ. गोविन्द लाल सरगड़ा
भूगोल विभागाध्यक्ष एवं
प्राचार्य, गुरूकुल महाविद्यालय, सागवाड़ा
जिला– डूँगरपुर (राज.)

शोध सारांश

भारत और अफगानिस्तान एक–दूसरे के पड़ोस में स्थित दो प्रमुख दक्षिण एशियाई देश है। 7वीं सदी तक अफगानिस्तान वृहत्तर भारत का एक भाग था, जिससे दोनों ही देशों के मध्य प्राचीन काल से ही गहरे संबंध रहे हैं। भारत के लिए अफगानिस्तान का महत्व न सिर्फ भौगोलिक–ऐतिहासिक–सांस्कृतिक निकटता की वजह से है बल्कि वर्तमान दौर में आतंकवाद के उभार ने भी अफगानिस्तान को भारत के लिए अति महत्वपूर्ण बना दिया है। वहीं दूसरी तरफ भारत के सामरिक हितों को सुरक्षित रखने हेतु भी अफगानिस्तान काफी महत्वपूर्ण है। दक्षिण–पश्चिम और मध्य एशिया में अपनी भू–सामरिक अवस्थिति के कारण अफगानिस्तान का महत्व बढ़ जाता है। अफगानिस्तान के संदर्भ में भारत की विदेश नीति कई कारकों से निर्धारित होती है, जिनमें इस क्षेत्र में पाकिस्तान के प्रभाव को कम करना सबसे महत्वपूर्ण है। चूंकि पाकिस्तान अफगानिस्तान का पड़ोसी देश है, इसलिए उसे इस बात का भौगोलिक फायदा मिला हुआ है, लेकिन अपने विकासोन्मुखी कार्यों की वजह से अफगानिस्तान में पाकिस्तान से कहीं ज्यादा लोकप्रिय भारत है, जिसे बनाये रखना भारत के सामने महत्वपूर्ण चुनौती है। भारतीय विदेश नीति स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अब तक विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम के आलोक में गत्यात्मक प्रवृत्तियों को धारण करती रही है। उसी बदलती प्रवृत्ति की कड़ी में भारत–अफगानिस्तान संबंध को शोध पत्र में देखने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः– आतंकवाद, भू सामरिक, संसदीय लोकतंत्र, इस्लामिक स्टेट, तालिबान।

प्रस्तावना

शताब्दियों से अफगानिस्तान भारत से संबंधित रहा है। वहां भारतीय संस्कृति का प्रभाव अन्य किसी भी संस्कृति से अधिक दिखाई देता है। बल्ख के खण्डहर, बामियान की बुद्ध की विशाल प्रतिमा, कनिष्क तथा कुशाण शासकों के सिक्के, प्रश्तरखण्ड, नगराम के तोरण तथा काबुल में बाबर की कब्र और आसामाई

का मंदिर, भारत– अफगानिस्तान संबंधों के ऐतिहासिक प्रमाण हैं। इन संबंधों की प्रगाढ़ता से मालूम होता है कि भारत–अफगानिस्तान युगों से पारम्परिक मित्र हैं।

ब्रिटिश भारत के रूप में भारत–अफगानिस्तान संबंधों में काफी उतार–चढ़ाव हुआ क्योंकि अफगानिस्तान में रूसी हस्तक्षेप जारी था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आपसी संबंधों में सुधार होना प्रारम्भ हो जाता है किन्तु, दो महाशक्ति देशों अमरीका व सोवियत संघ के बीच शीत युद्ध की घटना ने भारत–अफगानिस्तान संबंध को एक ग्रहण सा लगा दिया। शीत युद्ध के काल में अफगानिस्तान अमेरिका–सोवियत प्रतिस्पर्धा का शिकार रहा, जिसके कारण भारत तटस्थता के साथ अपने संबंध को बनाने में दृढ़संकल्प रहा। अर्थात् भारत का झुकाव किसी महाशक्ति के साथ नहीं था। दो महाशक्तियों की आपसी प्रतिस्पर्धा से मध्य एशिया अशान्त हो गया। अफगानिस्तान में सोवियत संघ का पूरी तरह से हस्तक्षेप हो गया तथा शासन सत्ता में भी अपनी अप्रत्यक्ष भूमिका निभाना भी शुरू कर दिया। भारत इस परिस्थिति में अपने राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि मानते हुए अफगानिस्तान से संबंध स्थापित करता है। भारत का कहीं न कहीं अप्रत्यक्ष रूप से शीतयुद्ध के दौर में सोवियत संघ की तरफ झुकाव था। इस वजह से अफगानिस्तान के मामले में भारत तटस्थता का परिचय देता है ताकि दोनों से संबंध बना रहे। सोवियत संघ की वापसी से अफगानिस्तान में शक्ति शून्यता को भरने का अवसर अमेरिका द्वारा प्रायोजित तालिबानियों को मिला। जिसका परिणाम यह हुआ कि तालिवान 1996–2001 के बीच अपनी सत्ता स्थापित करने में सफल हुआ। इस समय भारत और अफगानिस्तान के बीच संबंध अच्छे नहीं रहे क्योंकि तालिबान शासन का झुकाव पाकिस्तान की तरफ था।

संयोगवश 11 सितम्बर 2001 की घटना ने तालिबान शासन पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया। अमरीका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हमले की जिम्मेदारी आतंकी संगठन अलकायदा और तालिबानी दोनों ने लिया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने तालिबान के विरूद्ध **'ऑपरेशन एन्डयोरिंग फ्रीडम'** आरम्भ किया जिसका समर्थन अफगानिस्तान के उत्तरी गठबन्धन और भारत ने किया। जिसके फलस्वरूप तालिबानी सरकार का पतन होना शुरू हो गया। इसी समय सयुक्त राष्ट्र संघ के नेतृत्व में जर्मनी के शहर बॉन में अफगान गुटों का सम्मेलन हुआ जिसे **'बॉन समझौता'** के नाम से जाना जाता है और इसी समझोते के अंतर्गत अफगानिस्तान में एक अंतरिम प्रशासन का निर्माण किया गया जिसमें भारत की भूमिका महत्वपूर्ण थी। इस अंतरिम सरकार के अध्यक्ष हामिद करजई हुए। 2001 से अगस्तान ने बहुत किया है। भारत इस सफर में अफगानिस्तान के साथ आधारभूत संरचना के निर्माण से लेकर संसद तक अपनी भूमिका अदा कर रहा है।

International Journal of Business Economics and Management Research
Vol. 16, Issue 9,September 2025 Impact Factor: 8.857 ISSN: (2229-4848)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र ऊर्जा के क्षेत्र तथा सैन्य क्षेत्र जैसे अनेक आयामों में सहयोग प्रदान कर रहा है। जिसके फलस्वरूप भारत को अफगानिस्तान की स्थिरता में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस शोध पत्र में भारत– अफगानिस्तान के बीच संबंध कैसे बेहतर हो उन्हीं चुनौतियों और का उल्लेख किया गया है।

भारत एवं अफगानिस्तान कि भौगोलिक स्थिति

भारत और अफगानिस्तान की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार है, भारत उत्तरी गोलार्ध में स्थित है, जबकि अफगानिस्तान दक्षिण–मध्य एशिया में एक स्थलरुद्ध देश है। भारत के उत्तर–पश्चिम में अफगानिस्तान स्थित है, और दोनों देशों के बीच की सीमा को **'डूरंड रेखा'** कहा जाता है। अफगानिस्तान एक स्थलरुद्ध देश है, जिसका अर्थ है कि यह किसी भी समुद्र या महासागर से नहीं घिरा है। यह देश पहाड़ों से घिरा हुआ है, जिसमें हिंदू कुश पर्वत श्रृंखला भी शामिल है। अफगानिस्तान मध्य और दक्षिण एशिया के बीच स्थित है, और इसे **'हार्ट ऑफ एशिया'** भी कहा जाता है। यह देश रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह मध्य एशिया और दक्षिण एशिया के बीच एक प्रवेश द्वार है।

भारत उत्तरी गोलार्ध में स्थित है, और इसका मुख्य भूभाग $8^{0}4'$ और $37^{0}6'$ उ. अक्षांशों और $68^{0}7'$ और $97^{0}25'$ पू. देशांतरों के बीच फैला है। भारत एक प्रायद्वीपीय देश है, जो तीन तरफ से समुद्र से घिरा हुआ है। बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और हिंद महासागर। भारत की सीमाएँ 7 देशों के साथ लगती हैं, जिनमें अफगानिस्तान भी शामिल हैं। भारत और अफगानिस्तान के बीच की सीमा, जिसे **'डूरंड रेखा'** कहा जाता है, 106 किलोमीटर लंबी है, और यह जम्मू और कश्मीर के उत्तरी क्षेत्र में स्थित है।

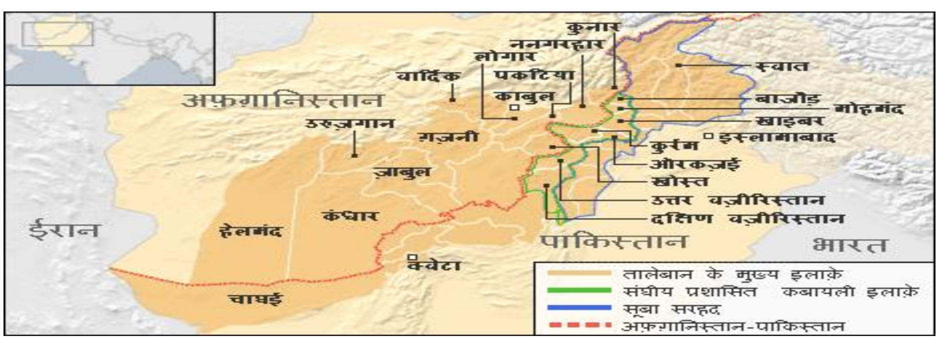

स्त्रोंतः– बीबीसी हिन्दी समाचार–पत्र

उद्देश्य

इस शोध पत्र में भारत–अफगानिस्तान के बीच भविष्य में बेहतर संबंध कैसे हो, उसी को सारगर्भित ढंग से समझने का प्रयत्न किया गया है।

International Journal of Business Economics and Management Research
Vol. 16, Issue 9,September 2025 Impact Factor: 8.857 ISSN: (2229-4848)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है।

भारत– अफगानिस्तान संबंध विश्लेषण

आज भारत के लिए अफगानिस्तान के संदर्भ में स्थायित्व का प्रश्नचिन्ह सबसे बड़ी चुनौती के रूप में दिखाई दे रहा है। इस कारण से भारत को गंभीरतापूर्वक अफगानिस्तान की जमीनी हकीकत को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। चुनौतियों की श्रृंखला क्रम में सर्वप्रथम अफगान राजतंत्र का पुनर्गठन करना चाहिए ताकि आम लोगों की सहभागिता बड़े तथा स्वयं को अफगानिस्तान सरकार का भाग समझे। वर्तमान में अफगानिस्तान में एक केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था है जिसके तहत प्रत्येक पांच वर्ष में राष्ट्रपति का चुनाव किया जाता है और उन्हीं के द्वारा देश के 34 प्रान्तीय गवर्नरों का चुनाव किया जाता है। इस व्यवस्था के कारण स्थानीय लोग अपने नेता का चुनाव नहीं कर पाते हैं। इस वजह से लोगों का जुड़ाव सरकार के साथ प्रत्यक्ष रूप से नहीं हो पाता है। अफगानिस्तान के स्थायित्व में यह एक बाधा के रूप में दिखाई देती है इसलिए केन्द्रीयकृत शासन व्यवस्था के स्थान पर धीरे–धीरे विकेन्द्रीकृत शासन व्यवस्था की ओर अग्रसारित कराने में भारत को महत्त्वपूर्ण भूमिका अपनानी चाहिए। भारत विश्व समुदाय के देशों की तुलना में सर्वव्यापक तौर पर विविध समूहों का प्रतिनिधित्व करता है, तब भी वहा स्थायित्व बनी हुई है। इसका कारण कहीं न कहीं शासन व्यवस्था में संसदीय लोकतंत्र की प्रणाली को जाता है। इसके साथ ही अफगानिस्तान के पडोसी देश पाकिस्तान में भी संसदीय लोकतन्त्र की प्रणाली को अपनाया गया है, जो कहीं न कहीं स्थायित्व का कारण है। इस वजह से अफगानिस्तान को भी अध्यक्षात्मक से संसदात्मक लोकतन्त्र की तरफ झुकाव करना चाहिए। विविधतापूर्ण समाज का नेतृत्व भारत ने जिस योग्यतापूर्वक ढंग से निवर्हन कर रहा है. यही सीख भारत को अफगानिस्तान की राजनीतिक प्रणाली को अधिक समावेशी बनाने में मदद करनी चाहिए। साथ ही साथ उसके संविधान में आवश्यक बदलाव करने के लिए राजनीतिक नेतृत्व को शिक्षित करने का प्रयत्न भी करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, संसदीय लोकतन्त्र जातीय विभाजन की समस्या को भी हल करने में अफगानिस्तान की मदद करेगा। वर्तमान राष्ट्रपति किसी एक जातीय समूह का होता है और बाकी के जातीय समूह यह महसूस करते हैं कि उन्हें राजनीतिक और सामाजिक प्रक्रिया से बाहर कर दिया गया है। ऐसी मानसिकता में परिवर्तन तब होगा जब सभी जातीय समूहों का उचित प्रतिनिधित्व संसदीय लोकतंत्र में

International Journal of Business Economics and Management Research
Vol. 16, Issue 9,September 2025 Impact Factor: 8.857 ISSN: (2229-4848)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

होगा। इस प्रकार का लोकतंत्र विधि–शासन को मजबूत बनाने में और विभाजित आबादी के मतभेदों को मिलाकर उन्हें एकजुट करने में मदद करेगा।

भारत–अफगानिस्तान के मध्य बेहतर संबंध बनने में दूसरी चुनौती अफनानिस्तान का अशान्त होना है। भारत को अपने सूचना तन्त्र के माध्यम से शान्ति बनाने के सभी आयामों को लागू करने का प्रयत्न करना चाहिए। भारत–अफगानिस्तान में सैन्य सहायता के साथ–साथ आर्थिक विकास पर सुनियोजित व सुव्यवस्थित ढंग से अवसर उपलब्ध करा सकता है। इसके साथ ही साथ वहां के जो जातीय समूह विकास की धारा में असहयोग प्रदान कर रहे हैं. उनके बीच मध्यस्थता करके उनको विकास की मुख्य धारा में योगदान करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उनको इस बात का भरोसा दिलाना चाहिए कि बिना शान्ति के अफगानिस्तान के विभिन्न जातीय समूहों का विकास नहीं हो सकता। इस प्रकार भारत शान्ति बनाने के विविध आयामों में नेतृत्व प्रदान कर सकता है। भारत द्वारा किया गया हस्तक्षेप उसकी क्षेत्रीय विशिष्टता को बढ़ाएगा तथा इस क्षेत्र की भू–राजनीति और भू–अर्थव्यवस्था में उसके लिए जगह भी बनायेगा।

दोनों देशों के बीच बेहतर संबंध स्थापित करने में एक बड़ा बाधक तालिबान की समस्या है। तालिबान अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में अपनी भूमिका का उल्लेख निष्पक्ष रूप में नहीं कर रहा है, जिससे लोगों के मन में संदेह का भय व्याप्त है। भारत को तालिबान के साथ दो ढंग से निपटने का प्रयत्न करना चाहिए। एक तो अफगानिस्तान की जनता का विश्वास हासिल करके दूसरा स्थानीय सैन्य सहायता के माध्यम से तालिबानी समस्या का समाधान खोजा जा सकता है। इसके पीछे कारण यह है कि तालिबानी शासन से भी लोग खतरनाक ढंग से आहत हुए थे। इसलिए समय की जरूरत यही है कि उन्हें इस ढंग से पहचाना और वर्गीकृत किया जाय, ताकि सुलह और जहां कहीं भी आवश्यक हो बल द्वारा शान्ति के लिए उपयुक्त दृष्टिकोण तैयार किया जा सकें।

भारत के पास आंतरिक और वाह्य इंटेलिजेंस का एक बड़ा नेटवर्क है, जिसका उपयोग अफगानिस्तान सरकार के साथ संदिग्ध तालिबानी की समस्या में कर सकता है। इससे फायदा यह होगा कि तालिबान की संदिग्ध भूमिका का पर्दाफाश होगा तथा वैश्विक स्तर पर भारत की कुशलता से लोगों का विश्वास बढ़ेगा। बुद्ध. महावीर और गांधी की यह भूमि यदि अपने पड़ोस में शान्ति प्रक्रिया में उपाय करने में नाकाम रहती है तो यह देश एक दुर्लभ अवसर गवां देगा। वह भी खासतौर से इस हकीकत को देखते हुए कि इस दिशा में भी चीन भारत से कहीं आगे है।

भारत– अफगानिस्तान के बीच बेहतर संबंध स्थापित करने में भू–राजनीतिक अनिवार्यताओं का भी महत्व है। इस भू–राजनीतिक अनिवार्यता में पाकिस्तान के माध्यम से अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित की जा सकती है। पाकिस्तान को नजरअंदाज करके अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित करना एक दुर्लभ कार्य है। पाकिस्तान अपने आप में आतंकवाद को उत्पन्न करने की एक प्रकार से मैन्यूफैक्चरिंग इंडस्ट्री है, जिसका एक्सपोर्ट वह आये दिन करता रहता है। इस समस्या का समाधान भारत पाकिस्तान की प्रादेशिक असुरक्षा और उसके सामरिक हित का आश्वासन देकर किया जा सकता है। इसके साथ ही साथ एशिया महाद्वीप के ताकतवर देश जैसे भारत, चीन, रूस की भी साझी समस्या आतंकवाद है, जिसकी जड़ें पाकिस्तान में दिखती है। उदाहरण के रूप में चेचन्या रूस की कमजोरी, झिनझियांग चीन की कमजोरी, उसी तरह कश्मीर भारत की कमजोरी है? जो आतंकवाद की समस्या से ग्रसित है। इसलिए ऐसी स्थिति का निपटारा राजनीतिक, कूटनीतिक और सैन्य निवेश के जरिए संगठन बनाकर की जा सकती है।

अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित करने की दिशा में भारत, चीन, रूस, पाकिस्तान को मिलाकर संयुक्त प्रयास करने की आवश्यकता है अन्यथा वे दिन दूर नहीं कि इस्लामिक स्टेट (आई.एस.) जैसे आतंकवादी संगठनों का वर्चस्व हो जाय, तब समस्या का निराकरण करने में असुविधा होगी। साझा सूचनातन्त्र के माध्यम से संगठित होकर अधिकांश रूप में आतंकवाद की समस्या का निदान किया जा सकता है। भारतीय इंटेलिजेंस एजेंसियों ने यह स्वीकार किया है कि इस क्षेत्र में आई.एस. का उभरना देश की सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है।

आई.एस. की समस्या से ईरान व मध्य एशिया का भी महत्व बढ़ जाता है। तालिबान के लड़ाकों का आई.एस. से सम्पर्क होना भारत के लिए बहुत बड़ा खतरा होगा और उसकी सुरक्षा प्रभावित होगी। इसलिए भारत ईरान व मध्य एशिया के देशों के साथ मिलकर उपयुक्त तरीके और तन्त्र विकसित कर निरन्तर सुसंगत और दीर्घकालीन प्रयास के द्वारा तालिबानियों के अर्थव्यवस्था को धूमिल करके समाधान ढूंढा जा सकता है।

भारत के द्वारा एक प्रयास यह भी किया जा सकता है कि तालिबान को राजनीतिक पार्टी में परिवर्तित कराकर और विभिन्न पदो के लिए अफगानिस्तान के चुनावों में शिरकत कर अफगानिस्तान की राजनीति की मुख्य धारा में लौटाना चाहिए। तालिबान को अवाम के साथ मिलकर अपनी सत्ता को वैधता प्रदान करना चाहिए ताकि लोगों का विश्वास बढ़े। इससे अपनी खराब छवि को सुधारने का अवसर मिल जायेगा और लोगों का विश्वास भी बढ़ जायेगा।

International Journal of Business Economics and Management Research
Vol. 16, Issue 9,September 2025 Impact Factor: 8.857 ISSN: (2229-4848)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

अफगानिस्तान में शान्ति की राह लम्बी और कठिन दिखाई देती है लेकिन एक बार गति मिलने पर भारत को फायदा और सिर्फ फायदा होगा। इसलिए यह भारतीय नीति निर्माताओं पर निर्भर है कि वे इस क्षेत्र में अपने को एक अवसर के रूप में देखे न कि संदेह की दृष्टि से।

भारत– अफगानिस्तान की चुनौतियों में से एक चुनौती भ्रष्टाचार की समस्या अफगानिस्तान में विद्यमान है। भारत को इस समस्या का समाधान यहां की सूचनातन्त्र के साथ सहभागी रूप में कर सकता है। अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में जिस तन्मयता के साथ भारत अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहा है, उसमें भ्रष्टाचार अपने आप में एक बहुत बड़ी बाधा है। भारत इस तरह से साधन और तन्त्र विकसित कर सकता है, जिससे भारत द्वारा अफगानिस्तान में निवेश किया हुआ धन किसी भी तरीके से गलत हाथों में न पड़े और न ही भ्रष्टाचार का शिकार हो। भ्रष्टाचार का कम होना, निवेश का बढ़ाना आपस में जुड़े हुए है। '

भारत– अफगानिस्तान के बीच बेहतर संबंध संचालित करने में चीन एक अवसर और चुनौती दोनों रूपों में भूमिका अदा कर रहा है। अमेरिका द्वारा सैन्य की वापसी से चीन का अवसरवादी दृष्टिकोण भारत को चिन्तित कर रहा है। अफगानिस्तान चीन शान्तिपूर्ण दिशा में कदम उठा रहा है जैसे अफगान सरकार और तालिबान के बीच शान्ति वार्ता को आयोजित कराने का प्रयास जारी है ताकि पश्चिम एशिया के बाजारों तक पहुंच आसान हो सके। भारत को रेशम मार्ग को अवसर के रूप में देखना चाहिए, न कि चुनौतियों के रूप में भारत को अपनी उदारता तथा गांधीवादी मूल्यों को अपनाते हुए अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में निःस्वार्थ भाव योगदान करना चाहिए। इसका लाभ यह होगा कि अफगानिस्तान की जनता भारत और चीन के आर्थिक विकास के मॉडल की तुलना करेगी और उनको यह मालूम होगा कि कौन देश हमारे साथ दीर्घकालिक रूप से बिना स्वार्थ के जुड़ा है। विदेश नीति में यह देखा जाता है कि किस देश के साथ अपने राष्ट्रीय हित को अधिकांश रूप में पूरा कैसे हो. उसी को महत्व दिया जाता है। अफगानिस्तान की जनता का विश्वास भारत को दीर्घकालिक रूप से आपसी संबंध मे मजबूती प्रदान करेगा।

यद्यपि, देखा जाय तो पाकिस्तान के साथ चीन अपनी स्थिति का लाभ उठा सकता है, जोकि अफगानिस्तान में शान्ति की कुंजी है। इसलिए हर तरह से चीन के द्वारा शान्ति सीमित करने की दिशा में अफगान सरकार और तालिबान के बीच वार्ता को फास्ट ट्रैक पर लाने के लिए सार्थक प्रयास किया जा रहा है। भारत को अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित करने में चीन को एक अवसर के रूप में देखना चाहिए। अफगानिस्तान में चीन का हस्तक्षेप बढ़ जाने से भारत को अपनी विदेश नीति का विस्तार से निरीक्षण करने की जरूरत है ताकि अपनी भूमिका को अनवरत प्रासंगिक बनाया जा सके।

International Journal of Business Economics and Management Research
Vol. 16, Issue 9,September 2025 Impact Factor: 8.857 ISSN: (2229-4848)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

निष्कर्ष

अफगानिस्तान भारत की मध्य एशिया रणनीति के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह उस बंदरगाह विहीन देशों को कनेक्टिविटी प्रदान करता है। अफगानिस्तान अपनी छवि को बदलना चाहता है। वह चाहता है कि आर्थिक विकास के द्वारा यहाँ के लोगों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार मिले तथा प्राकृतिक संसाधनों के द्वारा अपनी पहुंच का विस्तार वैश्विक पूंजी के रूप में भी चाहता है। इसके साथ ही साथ उसका मानना है कि स्कूलों, अस्पतालों, शैक्षिक एवं अन्य बुनियादी सामाजिक विकास संस्थानों का विकास अफगानिस्तान के लोगों को वैकल्पिक अवसर भी प्रदान करेगा।

दशकों से युद्ध का शिकार अफगान समाज को पुनरूद्धार की अत्यधिक आवश्यकता है जिसके लिए उसे जबरदस्त निवेश की जरूरत है। अफगानिस्तान में स्थापित आधारभूत संरचना का व्यापक अभाव है। जिसके फलस्वरूप अन्य क्षेत्रों में भी रोजगार का अभाव है। दूसरी ओर ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोग तालिबान से सहानुभूति रखते हैं और अफगान सरकार पर यह खतरा मंडराता रहता है कि कहीं ये तालिबान की आक्रामकता का शिकार न हो जाय जिससे व्यवस्था को चुनौती देने लगे। इन कारणों से अफगानिस्तान कहीं न कहीं पाकिस्तान के साथ मिलकर अपने विकास व आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में भागीदार बनाने में दिलचस्पी रखता है। भारत को भी अफगानिस्तान को साथ मिलकर आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में सफल योगदान का निर्वहन करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त भारत को अफगानिस्तान में चीन की भूमिका को सकारात्मक रूप में देखना चाहिए क्योंकि भारत–अफगानिस्तान का संबंध बहुत पुराना है जिससे हमें वह शंका की दृष्टि से नहीं देखेगा। चीन का हित अफगानिस्तान में केवल आर्थिक है। इसलिए भारत को चिंता नहीं करनी चाहिए कि अफानिस्तान और पाकिस्तान दोनों में चीन की बढ़ती व्यापकता के साथ उसकी सुरक्षा चिंताओं पर असर पड़ेगा। चीन यह कभी नहीं चाहेगा कि भारत अमेरिका की ओर ज्यादा झुके, इसलिए वह भारत को इस क्षेत्र के साथ–साथ अफगानिस्तान में काम करने का पर्याप्त स्थान प्रदान करेगा।

इस प्रकार भारत को दक्षिण एशियाई आर्थिक परिदृश्य से चीन के हस्तक्षेप से भयभीत नहीं होना चाहिए। बल्कि भारत को अपनी सॉफ्टपॉवर कूटनीति के विस्तार पर विशेष बल के साथ अपनी भूमिका को पुर्नभाषित करने की जरूरत है। भारत के पास तालिबान को समझौते की दिशा में लाने का एक अवसर है क्योंकि कहीं न कहीं यह माना जा सकता है कि दक्षिण एशियाई क्षेत्र में आई. एस. आई. एस. की वृद्धि और जोखिम को नियंत्रित करने में वह भारत की मदद करेगा। तालिबान के साथ शान्ति वार्ता में मध्यस्थता

करने के लिए भारत को चीन, पाकिस्तान तथा अन्य इच्छुक देशों के साथ भागीदारी करनी चाहिए। चीन इस दिशा में कदम उठा रहा है और अगर भारत इस क्षेत्र में भू–राजनीतिक और सामरिक विकास को नजरअंदाज करता है तो वह मौका गवां सकता है। इसलिए भारत को **'वेट एण्ड वॉच'** की नीति का त्यागकर इसे एक अवसर के रूप में स्वीकार कर अपनी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

संदर्भसूची

1. राव, प्रदीप सिंह, श्अफगानिस्तान समस्या भारतीय विदेशनीति के संदर्भ में प्रिन्टबैल पब्लिशिंग, जयपुर, 1997, पृ. सं. 03।

2. राव, प्रदीप सिंह, श्अफगानिस्तान समस्या भारतीय विदेशनीति के संदर्भ में प्रिन्टबैल पब्लिशिंग, जयपुर, 1997, पृ. सं. 05।

3. राव, प्रदीप सिंह, श्अफगानिस्तान समस्या भारतीय विदेशनीति के संदर्भ में प्रिन्टबैल पब्लिशिंग, जयपुर, 1997, पृ. सं. 94।

4. बिस्वाल, तपन, 'अन्तर्राष्ट्रीय संबंध', ओरियंट ब्लैक स्वॉन, प्राइवेट लिमिटेड, नईदिल्ली, 2016, पृ. सं. 187।

5. बिस्वाल, तपन, 'अन्तर्राष्ट्रीय संबंध', ओरियंट ब्लैक स्वॉन, प्राइवेट लिमिटेड, नईदिल्ली, 2016, पृ. सं. 190।

6. बिस्वाल, तपन, 'अन्तर्राष्ट्रीय संबंध', ओरियंट ब्लैक स्वॉन, प्राइवेट लिमिटेड, नईदिल्ली, 2016, पृ. सं. 229।

7.सीकरी, राजीव, 'भारत की विदेशनीति चुनौती और रणनीति', सेज पब्लिकेशन इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. 52–53।

8. सीकरी, राजीव, 'भारत की विदेशनीति चुनौती और रणनीति', सेज पब्लिकेशन इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. 56–57।

9. सीकरी, राजीव, 'भारत की विदेशनीति चुनौती और रणनीति', सेज पब्लिकेशन इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. 218–219।

10. जैन, बी.एम., 'अन्तर्राष्ट्रीय संबंध', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 2007, पृ. सं. 341–342।

11. जैन, बी.एम., 'अन्तर्राष्ट्रीय संबंध', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 2007, पृ. सं. 346–347।

12. वैदिक, डॉ. वेदप्रताप, अफगानिस्तान में सोवियत–अमरीकी प्रतिस्पर्धा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1973, पृ. स. 7–8।

13. पंत, पुष्पेश, '21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय संबंध', टाटा मैकग्राहिल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नईदिल्ली, 2014, पृ. सं. 19–20।

14. वैदिक, डॉ. वेदप्रताप, 'अफगानिस्तान कल, आज और कल', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2002, पृ. सं. 108–109।

15. गुप्ता, आलोक कुमार, भारत– अफगानिस्तान संबंध बदलती गति और नए अवसर, वर्ल्ड फोकस, अंक 43 अक्टूबर 2015, पृ. सं. 30–31।

16. अहमद, डॉ. सलीम, अफगानिस्तान के प्रति पाकिस्तान की नीति भारत से चुनौतियां, वर्ल्ड फोकस, अंक 68, नवम्बर 2017. पृ. सं. 72–73।